In Celebration Of Our

हमारे सफ़र के नाम

PLANNER

2003

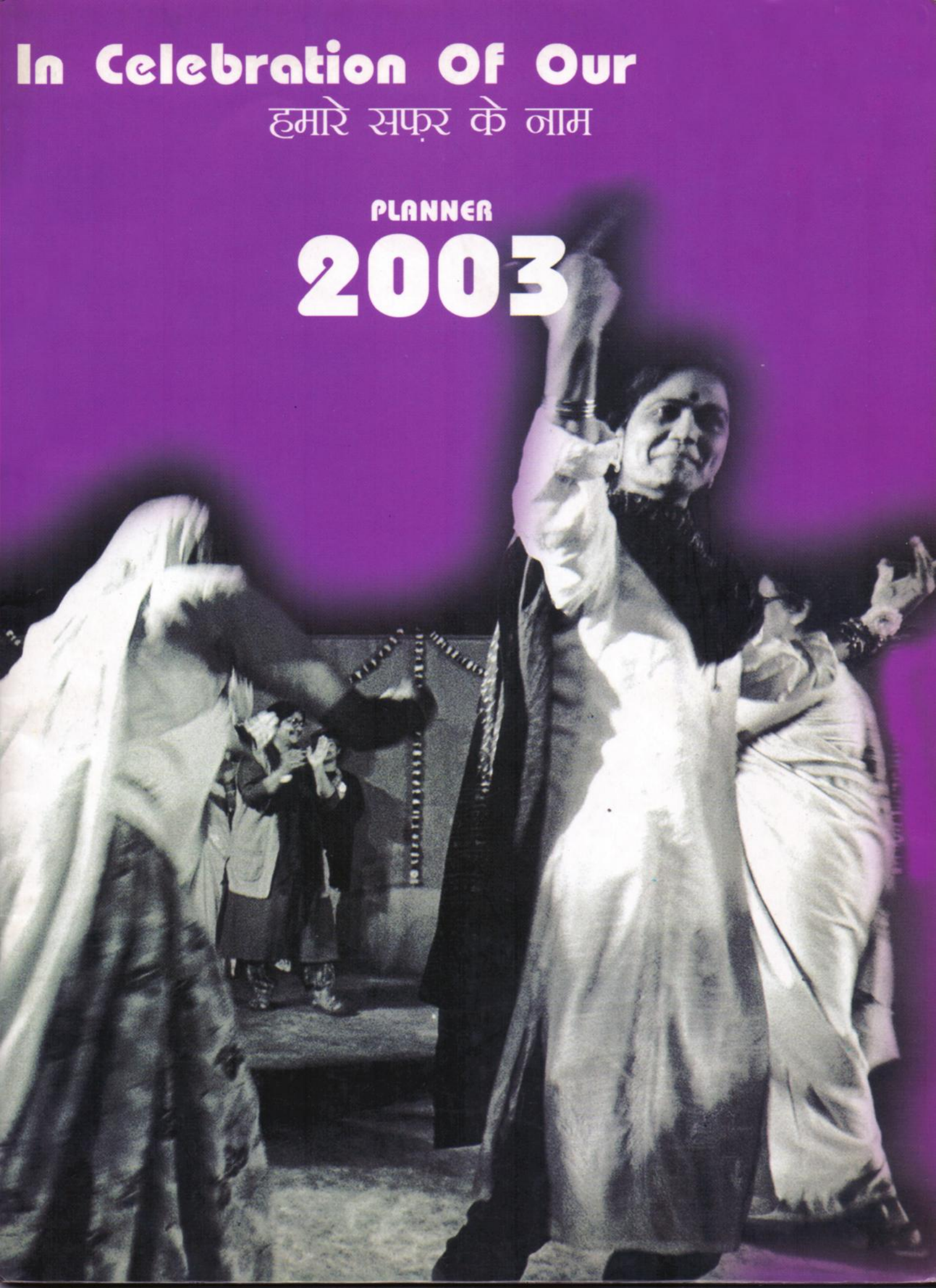

List of Holidays

अवकाश दिवस

26 January	जनवरी	Republic Day	गणतंत्र दिवस
12 February	फरवरी	Id-ul-Zuha	ईद-उल-ज़ुहा
14 March	मार्च	Muharram	मोहर्रम
19 March	मार्च	Holi	होली
11 April	अप्रैल	Ram Navmi	राम नवमी
15 April	अप्रैल	Mahavir Jayanti	महावीर जयंती
18 April	अप्रैल	Good Friday	गुड फ्राइडे
14 May	मई	Milad-un-Nabi	मिलाद-उन-नबी
17 May	मई	Buddha Jayanti	बुद्ध जयंती
15 August	अगस्त	Independence Day	स्वतंत्रता दिवस
20 August	अगस्त	Janmashtmi	जन्माष्टमी
2 October	अक्तूबर	Gandhi Jayanti	गांधी जयंती
4 October	अक्तूबर	Dussehra	दशहरा
25 October	अक्तूबर	Deepawali	दीपावली
8 November	नवम्बर	Gurupurab	गुरूपर्व
26 November	नवम्बर	Id-ul-Fitr	ईद-उल-फितर
25 December	दिसम्बर	Christmas	क्रिस्मस

Jagori is a women's resource centre based in New Delhi, which works to spread feminist consciousness for the creation of a just society. Our activities include documentation, training, research, creation of material in different media and campaigning on issues related to women's rights.

जागोरी दिल्ली में स्थित महिलाओं का एक संदर्भ केंद्र है, जो नारीवादी सोच के प्रसार द्वारा न्याय आधारित समाज के लिए प्रयासरत् है। हमारी गतिविधियों में डॉक्यूमेंटेयन, ट्रेनिंग, रिसर्च, विभिन्न माध्यमों में संदर्भ सामग्रियों का निर्माण व महिलाओं से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर अभियान चलाना है।

cover photos: sheba chhachhi inside photos: sheba chhachhi, dipta bhog, personal collection
design: alka misra printed at: childrens book trust (cbt), new delhi

In Celebration Of Our Journeys

हमारे सफ़र के नाम

PLANNER 2003

Name नाम : _____

_____

Address पता : (O) _____

_____

(R) _____

_____

Telephone फोन : (O) _____

(R) _____

(M) _____

C 54 Top Floor South Ext. Part-II
New Delhi-110049

सी 54 ऊपरी मंज़िल साउथ एक्स. II
नई दिल्ली-110049

Ph.: 91-11-26257015 · 26253629
Fax: 91-11-26253629
e-mail: jagori@del3.vsnl.net.in · jagori@spectranet.com
website: www.jagori.org

In Celebration of Our Journeys

Planner 2003

Last year, Jagori began the journey of exploring and giving voice to women's experiences of 'getting older', their anxieties, hopes and dreams with the Jagori calendar 2002 'Women: the beauty of time'. Through the process of creating the calendar emerged questions on the experiences of older women of the women's movement. As doyennes of the movement, they flung themselves into highly political struggles challenging the status quo with consequences far outside their known reach. Their political struggles, many a time with personal trade-offs, were fired by dreams of a different world and by a belief in the collective strength of women.

International Women's Day is a time when we celebrate our solidarity, when we recharge ourselves, our memories and our commitments to the women's movement. To celebrate and acknowledge the invaluable contributions of these pioneers in the women's movement in Delhi, Jagori had a programme 'In Celebration of Our Journeys' on the evening of 9th March 2002. Colleagues, family, friends, sisters in the movement joined us for an afternoon of music and cultural programmes and reflections of older women of the movement. We presented shawls and scrolls with testimonies from those who have worked and learnt from them to these inspiring and dynamic women, amidst much singing and dancing.

Held in the sylvan surroundings of Akshara Theatre in New Delhi, in an open air theatre under an ancient pipal tree, we honoured some among the thousands of women whose invaluable contribution to the movement we acknowledge and celebrate: 14 women from Delhi who have been very special friends of Jagori, and who have played an important role in the Indian women's movement; women who, through their work and struggles, have established a firm foundation for our own assertions of collective strength. They are Satyarani Chaddha, Subhadra Butalia, Shajahan Apa, Sharada Behan and Shanta Behan who gave life and strength to movements against dowry and violence; Gouri Choudhury, Jaya Shrivastava and Renuka Mishra, who have been in the forefront of mobilising and organising women at the grassroots; Vina Mazumdar, Lotika Sarkar and Uma Chakravarti who through their teaching and work have ensured that women's studies remains a discipline strongly rooted in women's activism and struggles; and Rati Bartholomew and Lakshmi Krisnamurthy, who have worked over decades to shape popular theatre into an instrument of women's expression. We also posthumously felicitated Sudesh Vaid, noted activist and academic and founder of People's Union for Democratic Rights (PUDR) and People's Union for Civil Liberties (PUDR), who passed away last year.

Jagori's Planner 2003 documents this celebration, with the aim of spreading information about the women's movement as widely as possible, and making known the remarkable contributions these women have made to our lives. The planner profiles their lives and their work and provides insights into the history of the women's movement in Delhi.

Translations on back pages

हमारे सफ़र के नाम

प्लानर 2003

पिछले साल, जागोरी के कैलेण्डर 'उम्र समय और मैं...2002' के द्वारा हमने उम्र व औरत के रिश्ते को व्यक्तिगत और राजनैतिक स्तर पर और गहराई से समझने की कोशिश थी।

इस कैलेण्डर की सर्जना और निर्माण प्रक्रिया के दौरान नारी आंदोलन की बुजुर्ग महिलाओं के अनुभवों से जुड़े कई सवाल मन में जागे। आंदोलन की ये स्तंभ अपने अदम्य साहस, जिजीविषा के साथ कहीं बड़े खतरों का सामना करती रही हैं। अपने परीचित दायरों के भीतर पल रही स्थितियों को तोड़कर, कई बार निजी जीवन की खुशियों का त्यागकर बडे बड़े राजनैतिक संघषों से जूझती रही हैं।

नारी आंदोलन ने लगातार समाज की पारंपरिक छवियों को चुनौती दी है, समाज में नई पहचानों, नए अर्थों, नए सपनों को आवाज और जगह प्रदान की है। अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस एक ऐसा समय है जब हम अपनी अखण्डता का जश्न मनाते हैं। इस दिन हम अपनी यादों को ताजा करते हैं और नारी आंदोलन के प्रति अपनी वचनबद्धता को दोहराते हैं। भारत में नारी आंदोलन में बुजुर्ग महिलाओं के अमूल्य योगदान को सम्मान देने, उनके प्रति अपना हार्दिक आभार व प्यार व्यक्त करने के लिए जागोरी द्वारा 9 मार्च, 2002 को **'अपने सफ़र के नाम'** कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उनसे मिले मार्गदर्शन और उनके योगदान को याद करते हुए कहे गए कथनों से युक्त स्क्रोल (सम्मान पत्र) व शॉल सम्मानित कार्यकर्ताओं को भेंट किए गए।

अक्षरा थियेटर के खुले मैदान में एक प्राचीन पीपल के पेड़ के नीचे हमने हजारों में से इन कुछ बहनों को सम्मानित किया। दिल्ली की 14 महिलाएं जो जागोरी की खास मित्र रही हैं और जिन्होंने भारतीय महिला आंदोलन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिन्होंने अपने काम और संघर्षों से हमारी सामूहिक ताकत को स्थापित करने के लिए एक मजबूत संगठन का निर्माण किया। ये हैं- **सत्यारानी चड्ढा, सुभद्रा बुटालिया, शाहजहां आपा, शारदा बहन** और **शांता बहन** जिन्होंने दहेज हत्या और हिंसा के खिलाफ़ आंदोलन में संघर्ष करते हुए एक उम्र बिता दी, **गौरी चौधरी, जया श्रीवास्तव** और **रेणुका मिश्रा** जिन्होंने ज़मीनी स्तर पर महिलाओं को संगठित और इकट्ठा करने के लिए पहल की, **वीना मजूमदार, लोतिका सरकार** और **उमा चक्रवर्ती** जिन्होंने अपने शिक्षण और अन्य कामों से यह साबित कर दिया कि महिला शिक्षण महिला आंदोलन और संधर्ष का एक मजबूत जड़ बन सकता है, **रति बार्थोलोमियो** और **लक्ष्मी कृष्णमूर्ति** जिन्होंने जनप्रिय थियेटर को महिलाओं की अभिव्यक्ति का सशक्त माण्यम बनाने के लिए कई दशकों तक काम किया, **सुश्री सुदेश वैद** को भी मरणोपरांत सम्मानित किया गया जो जानी मानी विद्वान, सामाजिक कार्यकर्ता व .यू.डी.आर. (पीपल्स यूनियन फ़ॉर डेमोक्रेटिक राइट्स) और पी.यू.सी.एल. (पीपल्स यूनियन फ़ॉर सिविल लिबर्टीज़) की संस्थापक थीं।

जागोरी का प्लानर 2003 इस समारोह को डॉक्यूमेंट करने का एक प्रयास है जिसका उद्देश्य महिला आंदोलन, उसमें इन महिलाओं के विशिष्ट योगदान और उनके जीवन के बारे में ज़्यादा से ज़्यादा लोगों तक जानकारी पहुंचाना है। इस प्लानर में उनके जीवन, उनके काम के बारे में जानकारी के साथ साथ दिल्ली में महिला आंदोलन के इतिहास की भी जानकारी मिलती है।

संवाद पीछे के पृष्ठों में

JANUARY

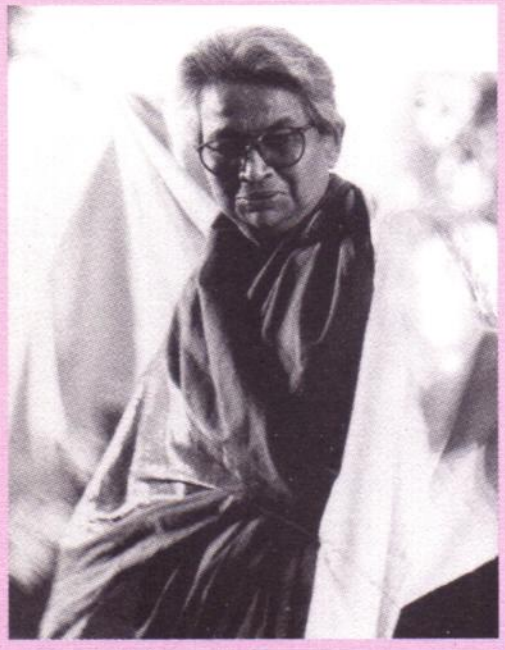

VINA MAZUMDAR

From a teacher of political science to being a vanguard of the women's movement in India, Vina di as she is affectionately called, has become an institution in herself. Vina di was part of the Committee on the Status of Women which produced the historical report in 1974, 'Towards Equality', a founding document for the women's movement which enumerated the oppressive state of the woman in India, after which welfare programmes for women found a place in the Governments policies. She was also a pioneer in the struggle to establish and get recognition for women's studies as a discipline, and co-founder of the Indian Association of Women's Studies and the Centre for Women's Development Studies. Vina di's dynamic combination of academics and activism and contributions at the level of policy and as an architect of the intellectual framework of the women's movement have inspired future generations of the movement.

SUN रवि	MON सोम	TUE मंगल
	"Matriarch of our movement, feisty scholar and activist, Vina di represents for me a generation that has given the women's movement in India the character it has - open to rethinking and debate and constant learning."	
5	6	7
12	13	14
19	20	21
26	27	28

2003

जनवरी

WED बुध	THU वीर	FRI शुक्र	SAT शनि
1	2	3	4
8	9	10	11
15	16	17	18
22	23	24	25
29	30	31	

FEBRUARY

शाहजहां आपा

१९७० के दशक में उनकी बेटी दहेज का शिकार हुई। अपनी बेटी के हत्यारों को सजा दिलाने के जुनून और दहेज हत्याओं के खिलाफ़ संघर्ष के साथ वे महिला आंदोलन के साथ जुड़ी। अपनी बेटी के हत्यारों से उसकी मौत का बदला लेने के लिए वे घर से बाहर निकली थीं, लेकिन जल्द ही उनके विचार बदले और उन्होंने इस मुद्दे पर काम करने की ठान ली। तब से आज तक वे दहेज की शिकार बहु बेटियों के हकों की लड़ाई लड़ रही हैं। अपनी इस लड़ाई के दौरान ही वे शक्तिशालिनी नाम की संस्था के साथ जुड़ी और औरतों पर हिंसा के खिलाफ़ चल रहे आंदोलनों का अभिन्न हिस्सा बन गईं। आज वे सत्तर साल की हैं, पर आज भी वे दहेज, हिंसा, सांप्रदायिक हिंसा जैसे अनेक मुद्दों पर बिना थके काम कर रही हैं।

SUN रवि	MON सोम	TUE मंगल
	'आपा ने ज़िन्दगी की लड़ाई को हर औरत की लड़ाई से जोड़कर	
2	3	4
9	10	11
16	17	18
23	24	25

2003

फरवरी

ंघर्श किया है। काम को ज़िन्दगी और ज़िन्दगी को काम समझा हैं।'

WED बुध	*THU* वीर	*FRI* शुक्र	*SAT* शनि
			1
5	6	7	8
12	13	14	15
19	20	21	22
26	27	28	

MARCH

सत्यारानी चड्ढा

सत्या रानी चड्ढा अस्सी के दशक में दहेज की शिकार हुई अपनी बेटी के हत्यारों को सजा दिलाने के लिए २१ सालों तक लड़ीं। न्याय के लिए अपनी इस लड़ाई के दौरान वे महिला आंदोलन के संपर्क में आईं और उसका एक ख़ास हिस्सा बन गईं। अस्सी के दशक से दुल्हनों को जलाए जाने, दहेज हत्याओं, घरेलू हिंसा के खिलाफ़ संघर्ष में सत्या जी ने अपनी अहम् भूमिका निभाई है। ऐसे हालातों में जी रही औरतों के लिए एक सुरक्षित जगह बनाने की कोशिशों के दौरान ही उन्होंने शक्तिशालिनी नाम से संस्था का गठन किया, जो कि पीड़ित महिलाओं के आश्रय और मदद के लिए काम कर रही है। आज सप्ताह में औरतों पर हिंसा व अत्याचार के लगभग १२ मामले आते हैं, जबकि किसी भी समय तीस महिलाओं को हम शक्तिशालिनी के शेल्टर होम में आश्रय लिए हुए देख सकते हैं।

SUN रवि	MON सोम	TUE मंगल
30	31	'अगर ये सीखना और
2	3	4
9	10	11
16	17	18
23	24	25

2003

मार्च

WED बुध	*THU वीर*	*FRI शुक्र*	*SAT शनि*
समझना है कि कैसे अपने निजी दुख और गुस्से को न्याय की लड़ाई के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है तो सत्या रानी जी की ज़िन्दगी को पढ़ सकते हैं।'			1
5	6	7	8
12	13	14	15
19	20	21	22
26	27	28	29

APRIL

RATI BARTHOLOMEW

Rati became increasingly involved with the National School of Drama in the 1960s, and co-founded various theatre groups in Delhi such as Yatrik, Dishantar. It was while working with students that she realized the therapeutic aspects of theatre. The turning point came in 1971, after attending a workshop in USA that she started doing workshops on the development of self through theatre. Rati plunged into the use of theatre for spreading consciousness and raising strong questions on political issues, and thereby got involved with Peoples Union for Civil Liberties (PUCL), Democratic Rights (PUDR) and SAHMAT. Since then she has trained many grassroots groups and feminist activists on the use of theatre as a tool of activism. Her plays 'Raj Darpan' against British rule, and Jala Ped' (on the Hiroshima and Nagasaki bombing), 'Kaath ki Gaadi' (on leprosy) and 'Bahu' (on a widow in feudal society) remain landmarks.

SUN रवि	MON सोम	TUE मंगल
		1
6	7	8
13	14	15
20	21	22
27	28	29

2003

अप्रैल

WED बुध	THU वीर	FRI शुक्र	SAT शनि
2	3	4	5
9	10	11	12
16	17	18	19
23	24	25	26
30			

"Rathi taught us that in any situation, creativity is central."

MAY

शारदा बहन

उनका बचपन अलीगढ़ के निकट एक गांव में बीता। उन्होंने अपनी जवानी दिल्ली की झुग्गी बस्तियों में औरतों के अधिकारों की लड़ाई में समर्पित कर दिया। उन्होंने महिलाओं को संगठित करते हुए कई मुद्दों पर आंदोलन चलाए, जैसे १९८२ में बाढ़ पीड़ित बस्ती वासियों के लिए, १९८४ में दंगा पीड़ित परिवारों को पुनर्वासित करने में और बाबरी मस्जिद के मुद्दे पर। वे 'एक्शन इंडिया' नामक संस्था के साथ जुड़ी हैं जो कि फ़ील्ड में औरतों के स्वास्थ्य, कानूनी जानकारी, औरतों के आर्थिक स्वावलंबन के लिए काम कर रहे स्वयं सहायता समूहों का संगठन है।

SUN रवि	MON सोम	TUE मंगल
	'आज भी एक अटूट हौसले के साथ आगे चली जा रही हैं। रखना और हर मीटिंग में मौजूद होना, ज़रूरतमंदों के लिए ऐसी लगन और भावना शारदा बहन में ही	
4	5	6
11	12	13
18	19	20
25	26	27

2003

मई

WED बुध	THU वीर	FRI शुक्र	SAT शनि
हमेषा अपनी बात सामने हमेषा तैयार रहना, दिखती है।'	1	2	3
7	8	9	10
14	15	16	17
21	22	23	24
28	29	30	31

JUNE

LOTIKA SARKAR

In the wave of legal reforms through the 1980s, there was not a single occasion in which Lotika Sarkar was not involved and indeed did not play a leading role. Also part of the Committee which brought out 'Towards Equality', she is one of the four Delhi academics who penned the famous Open Letter to the Chief Justice in 1979 that sharply criticised the Supreme Court judgement on the Mathura rape case (a landmark case of custodial rape of a young tribal girl named Matura). Copies of the letter were sent out to women's groups in Gujarat, Maharashtra, and some southern states, and it had a multiplier effect as it not only did buttress the fledgling women's movement, it brought about a radical change in the ways rape and consent are understood in the legal framework. Lotika di is associated with the Center for Women's Development Studies, and is also the editor of the journal, 'Women and Law: Contemporary Problems'.

SUN रवि	MON सोम	TUE मंगल
1	2	3
8	9	10
15	16	17
22	23	24
29	30	"I had heard so much at an IAWS meeting changing role of the absorbing every word better in the next few Bengalis, Lotikadi is a coming back in a laughing fit to split

2003

जून

WED बुध	THU वीर	FRI शुक्र	SAT शनि
4	5	6	7
11	12	13	14
18	19	20	21
25	26	27	28

about Lotikadi that when I first met her, I was completely in awe of her. This was in 1993, on the women's movement and the State, where she gave a brilliant exposition of the judiciary in Indian democracy. I remember hovering on the fringes of the group surrounding her, of her conversation and trying to gather the confidence to ask a question. I got to know her much years But my favourite memory is an encounter in Hyderabad, when I discovered that, like all true committed foodie. Sallying forth in search of the best biryani in town, overeating dangerously and ramshackle taxi without wipers, in the worst thunderstorm either of us had ever encountered, our sides - that 's when I was completely taken in by Lotikadi! "

JULY

Subhadra Butalia

Subhadra was an integral part of the anti dowry campaign of the late 1970s in the initial stages of the women's movement. She was active in 'Om Swaha', a play attacking dowry and dowry murder, which elicited such a powerful response that people from different localities asked the group to perform in their areas; this was one of the first attempts for many middle class women at activism. In 1983, following protests after the Sudha Goel case when the accused (Sudha Goel's husband) was let off due to 'inadequate evidence', Subhadra was one of those against whom a contempt of court petition was filed for criticising the High Court judges for this judgement. (In 1985 the Supreme Court reversed the judgement and convicted the mother-in-law and husband with life imprisonment.) Subhadra is the founder of Karmika a counseling center in Delhi; she has recently published a book, 'The Gift of A Daughter', which interweaves her own story as an activist and the anti-dowry movement of the late seventies in Delhi.

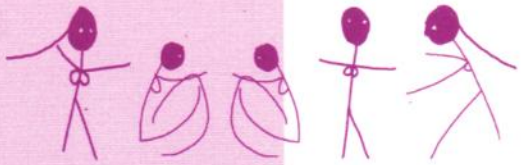

SUN रवि	MON सोम	TUE मंगल
		1
6	7	8
13	14	15
20	21	22
27	28	29

2003

जुलाई

WED बुध	THU वीर	FRI शुक्र	SAT शनि
2	3	4	5
9	10	11	12
16	17	18	19
23	24	25	26
30	31		

"Subhadra has really helped shape the women's movement from the 1970s. I personally have learnt much about courage from you..."

AUGUST

GOURI CHOUDHURY

When Gouri first came to Delhi, she got associated with the organisation, Mobile Creches, working in the slums of Yamuna Pushta. Her first struggle was to help procure ration cards for the riksha-pullers of unauthorised colonies whom she managed to organise. She was at that time one of the founders of Saheli, the first organised women's group in Delhi. Saheli's first office was at her own residence! Later she co-founded Action India through which she started working with the grassroots on issues of their rights. She set up a weaver's cooperative, called Sunder Handloom Society and enabled a platform for community women to acquire the skill of making handicrafts and exhibiting their skills too. Over the last twenty years Gouri has been consistently associated with giving voice to peoples movements, and mobilizing community women into collectives to take up issues of violence, health, governance and basic rights.

SUN रवि	MON सोम	TUE मंगल
31	*"In admiration for your ability to cross class women, helping them explore their capacities justice. Over a decade ago, you also gave class women find expression*	
3	4	5
10	11	12
17	18	19
24	25	26

2003

अगस्त

divides and single-mindedly work with poor
and become strengthened in the struggle for
Saheli a home and identity, helping middle
in feminist activism."

WED बुध	THU वीर	FRI शुक्र	SAT शनि
		1	2
6	7	8	9
13	14	15	16
20	21	22	23
27	28	29	30

SEPTEMBER

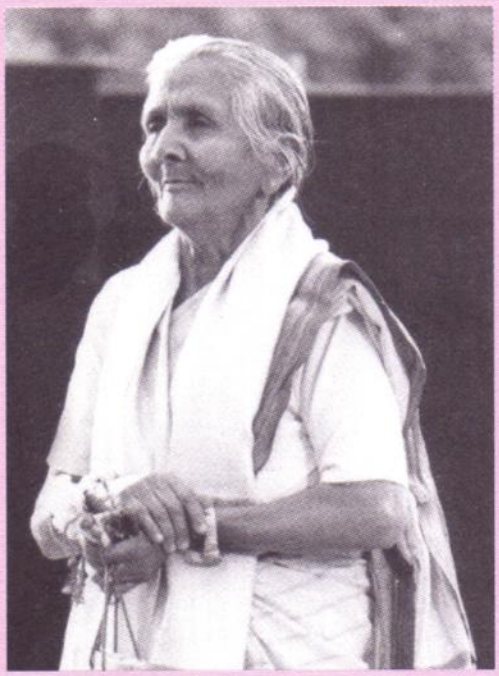

शांता बहन

इनका जन्म बर्मा में हुआ। वे १९४२ में बर्मा पर जापानी हमले की गवाह हैं। इसी समय इनका परिवार भारत आकर देहरादून में बस गया। १६ साल की उम्र में अपने से दुगनी उम्र के व्यक्ति के साथ इनका विवाह हो गया। पति के देहांत और व्यक्तिगत जीवन संघर्षों के बाद आखिर वे १९७६ में दिल्ली आ गईं और पचास साल की उम्र में बस्ती स्तर पर जमीनी कार्यकर्ता के रूप में काम करते हुए उन्हें अपने जीवन का मकसद मिला। उन्होंने बस्तियों में पुरुषों के साथ काउंसलिंग की कि वे अपनी पत्नियों के साथ कैसा व्यवहार कर सकते हैं। उन्होंने महिलाओं को साक्षर बनाने पर जोर दिया। औरतों के खिलाफ़ होने वाली हिंसा और दहेज उत्पीड़न के खिलाफ़ वे सक्रिय रूप से काम करती रही हैं। आज भी वे हफ़्ते में छः दिन शहरी बस्तियों में काम करती हैं। आजकल वे 'अंकुर' नामक संस्था के साथ जुड़ी हैं जो युवतियों महिलाओं के सशक्तिकरण व अनौपचारिक शिक्षा के लिए काम कर रही हैं।

SUN रवि	MON सोम	TUE मंगल
	1	2
7	8	9
14	15	16
21	22	23
28	29	30

2003

सितम्बर

WED बुध	THU वीर	FRI शुक्र	SAT शनि
3	4	5	6
10	11	12	13
17	18	19	20
24	25	26	27

'शांता बहन बस्ती में हर खतरों में कूद पड़ती हैं। कभी अपना स्वार्थ नहीं देखतीं।'

OCTOBER

UMA CHAKRAVARTI

Uma has been associated with the women's movement since the seventies. At that time she was already involved with both the teacher's movement in Delhi University and the civil rights movement. The year before the emergency witnessed a coming together of civil and democratic movements on the campus, and early discussions on women's specific oppressions and the institutional framework of patriarchy. From 1977 onwards she was deeply involved in these movements. In the early 80s with the expansion of the women's movement around issues such as custodial rape, oppression of women within the famiy, and the concurrent birth of women's studies, her own academic work began to move towards understanding the cultural practices which sanction subordination and the links between gender, caste and class stratification. Uma is a renowned historian and has greatly contributed to rewriting histories from a womens perspective; she has been teaching at Delhi University for over twenty years.

SUN रवि	MON सोम	TUE मंगल
"Teacher, scholar and inspiration to so many generations of students the university has been made more meaningful for me because of this voice of conscience - insistent, nagging and absolutely impossible to ignore."		
5	6	7
12	13	14
19	20	21
26	27	28

2003

अक्तूबर

WED बुध	THU वीर	FRI शुक्र	SAT शनि
1	2	3	4
8	9	10	11
15	16	17	18
22	23	24	25
29	30	31	

NOVEMBER

JAYA SHRIVASTAVA

Jaya was involved in social work in Patna before she moved to Delhi in 1980. She got involved in issues of human rights and women's rights after the 1984 riots in Delhi where she worked with Sahèli and many individuals and groups on rehabilitation for the widows of the victims of the riots. For several years she was the convener of Nagarik Ekta Manch, a citizen's committee set up after the riots to facilitate relief efforts. Jaya then got involved with Ankur an organisation which provides education to children, particularly the girl child and women, and took on its reins with a renewed vision. She has also been involved in many other issues and forums including campaigns for housing rights, campaigns against communalism and various peoples' movements.

SUN रवि	MON सोम	TUE मंगल
30	"Her infinite patience, her sense of fairness and on with such dedication against all odds and things and is able to see the	
2	3	4
9	10	11
16	17	18
23	24	25

2003

नवम्बर

her singing! To be able to sustain yourself in your work and carry never lose hope is remarkable. I love the way she plunges into organic links between all issues...."

WED बुध	*THU* वीर	*FRI* शुक्र	*SAT* शनि
			1
5	6	7	8
12	13	14	15
19	20	21	22
26	27	28	29

DECEMBER

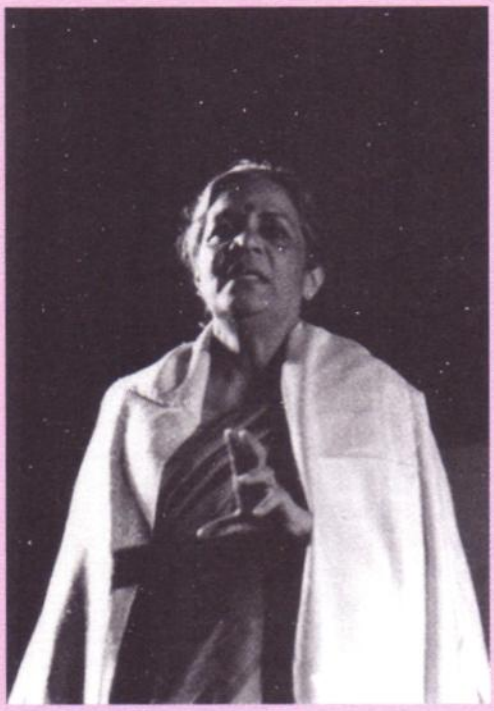

RENUKA MISHRA

Renuka has been deeply involved in the struggles of agricultural workers and issues around land reforms and minimum wages. She was active in the Delhi Dehat Mazdoor Union and also in Om Swaha in the late seventies. She founded and edited the pioneering magazine 'HOW / Kaise' in English and Hindi, documenting struggles of the unorganised sector and the history of peasant struggles from all over the country, making great strides in bringing the women's question into these struggles. Over the past few years she has gotten deeply involved in Kashmir. Along with a small group, she works in Kashmir now helping children to get back to school and helping local groups develop and move towards a framework of empowerment. She founded the organisation Nirantar, a resource center on issues around women and education based in Delhi.

SUN रवि	MON सोम	TUE मंगल
	1	2
7	8	9
14	15	16
21	22	23
28	29	30

2003

दिसम्बर

WED बुध	THU वीर	FRI शुक्र	SAT शनि
3	4	5	6
10	11	12	13
17	18	19	20
24	25	26	27
31			

"She's at her best in a crisis - cool-headed, pragmatic, completely in control. The way she handled hecklers and trouble-makers at the dharna against child sexual abuse in Karvi, using quotations from the Hindu epics to blunt every argument they threw at us - she was magnificent! "

JANUARY

LAKSHMI KRISHNAMURTY

With her talent and ability to communicate the most complex and serious of issues in simple ways to the common people, Lakshmi brought a unique vibrancy to the women's movement, helping to carry its messages far beyond the literacy barrier. In 1983, she founded the organisation, Allaripu, in Delhi with the basic objective of combining theatre with development and activism. She worked with grassroots groups, exclusive women's groups and mixed groups consistently evolving methodologies for the effective usage of theatre for social development and activism. Lakshmi enabled women's groups and collectives to use varied and creative medium to express themselves, and mobilize opinion and political solidarity on issues of women's oppression.

SUN रवि	MON सोम	TUE मंगल
	"Through her ability to use the body and she has trained so many activists and laid theatre as a method of training."	
4	5	6
11	12	13
18	19	20
25	26	27

2004

जनवरी

WED बुध	THU वीर	FRI शुक्र	SAT शनि
playful methodology, the foundation for	1	2	3
7	8	9	10
14	15	16	17
21	22	23	24
28	29	30	31

Sudesh Vaid सुदेश वैद

(1940 - 2001)

"Sudesh was founder member of the PUCL and the PUDR. PUDR was an organisation that was both her political space and her family,-her home was the home of the PUDR where everyone was welcome. We have all spent endless hours at her dining table-over endless cups of tea-talking about everything under the sun-from peoples struggles to the teachers struggles at DU to feminism to dowry murders to state repression to communalism and riots to literature and to films.

Although Sudesh was totally committed to the PUDR and the left movement she was a feminist too, since there was no question of prioritising or segmenting the different contradictions in our society. If I have to sum up the essence of Sudesh it would be her extraordinary integrity; totally uncomprising in her politics she made no concessions to adjustments. Sudesh, who could have been a first rate academic scholar, never did anything that brought her personal credit;-all her work was in the collective of PUDR and all her work was political. Sudesh had in her life created the alternative family that feminists have talked about but been unable to forge in most cases. She has also left behind many legacies-in political work, in workstyles that were fiercely democratic and in the strength of her relationships. In a fitting tribute to her life her body was prepared for the funeral draped in a red cloth and a purple cloth-the personal was the political right until the end."

-Uma Chakravarti

सुदेश पी.यू.सी.एल. और पी.यू.डी.आर. की संस्थापक सदस्य थीं। पी.यू.डी.आर. एक ऐसा संगठन था जो उनका घर और दफ़्तर दोनों था- जहां सबके लिए जगह थी, सबका स्वागत होता था। हम सबने उनके घर में खाने की टेबल पर घंटों चाय की गर्म चुस्कियों के साथ जन आंदोलन, विश्वविद्यालय के अध्यापक आंदोलन, दहेज हत्या, राज्य के दमन और सांप्रदायिकता और दंगे, फिल्मों जैसे हर मुद्दे पर चर्चा करते हुए बिताए हैं।

चाहे सुदेश की वचनबद्धता पी.यू.डी.आर. और वामपंथी आंदोलन से थी, पर वे एक नारीवादी भी थीं, इसलिए उनके लिए समाज में व्याप्त समस्याओं पर नज़रिए को लेकर कोई विचार भेद और अलगाव नहीं था। अगर मैं कुछ शब्दों में सुदेश की क्षमताओं को बांधू तो वह उनकी अद्भुत संपूर्णता ही थी, सुदेश जो एक प्रथम श्रेणी की छात्रा और स्कॉलर रहीं, उन्होंने अपने फायदे के लिए कभी कुछ नहीं किया बल्कि उनके समस्त कार्य पी.यू.डी.आर. के साथ ही सामूहिक रूप से समर्पित रहे, वे राजनैतिक रूप से बहुत सक्रिय रहीं। सुदेश ने अपने जीवन में एक वैकल्पिक परिवार का निर्माण किया जिसके बारे में नारीवादी बात तो करते रहे हैं, पर अधिकतर मामलों में वह साकार नहीं हो पाता। वे हमारे लिए बहुत कुछ छोड़कर गई हैं। हम उनके जीवन से बहुत कुछ सीख सकते हैं।'

उमा चक्रवर्ती

translations

Satyarani Chaddha *(Mar)*

Parent of a victim of a horrific case of dowry death in the early 1980s, Satyarani Chaddha fought tirelessly for 21 long years to get the people responsible for the murder into jail with a sentence of 7 years imprisonment. In her search for justice, she came across women from the movement and became a part of it. Through the 1980s, in the struggles against bride burning, dowry deaths, violence in the home, Satyarani played a central role. In an effort to create a safe space for many other women facing such situations, she co-founded the organisation, Shaktishalini, a shelter home and a crisis center for women in Delhi. Today, almost 12 cases a week come to Shaktishalini, while upto 30 women can be found staying in the shelter home at any time.

Shajahan Apa *(Feb)*

Shajahan Apa lost her daughter in a horrific case of dowry death in 1979 and that became the starting point of her association with the womens movement. She came out of her house with a resolve to seek revenge for her daughter but soon this gave way to a desire to work for change instead. She associated with the organisation, Shaktishalini and started campaigning against all kinds of violence against women. She became a succour for innumerable women torn apart by violence in their lives. At 70 years, Apa continues to work tirelessly against fighting the evils of dowry, violence against women and communalism in our society.

Sharada Behan *(May)*

Her childhood was spent near a village in Aligarh. She dedicated the energy of her youth to work for womens rights in the slums of Delhi. She campaigned vigorously and mobilized women for various issues that the movement took up: in 1982 for the flood affected victims of the slums, the families of the victims of the riots in 1984, the Babri Masjid issue among others. She is associated with the organisation Action India, which works in the field of womens health, provides legal literacy to them and through self-help groups gives women control over finances.

Shanta Behan *(Sept.)*

Shantaji was born in Burma. She grew up motherless, left in the care of ruthless father. She was a witness to the Japanese advance into Burma in 1942, amidst which her family fled to India. The family settled in Dehradun and Shantaji, at 16 was married to a man twice her age. After her husband died and after more personal struggles, she finally arrived in Delhi in 1976 and at the age of 50 years, she found her mission: to work as a grassroots worker in the citys slums. She has been counseling men to behave with their wives, persistently advocating for female literacy, working on issues of violence against women and dowry. She lives alone and continues to work tirelessly, six days a week in the citys slums. She is currently associated with the organisation, Ankur which provides education to the girl child, children in general and women.

संवाद

वीना मजूमदार (जनवरी)

राजनीति विज्ञान की एक अध्यापिका से महिला आंदोलन के सक्रिय प्रतिनिधि के रूप में वीना दी स्वयं में एक संस्था हैं। वे १९७४ में 'टुवर्ड्स इक्वालिटी' (समानता की ओर) औरतों के सामाजिक स्तर पर एक ऐतिहासिक रिपोर्ट निकालने वाली कमिटी की सदस्या थीं। यह दस्तावेज महिला आंदोलन का शुरूआती दस्तावेज था जिसने भारत में महिलाओं की सामाजिक स्थिति के बारे में सरकार को सही तस्वीर पेश करते हुए महिलाओं के कल्याण व विकास के लिए सरकारी नीतियों में सुधार हेतु गंभीर सुझाव दिए। वीना दी ने महिला अध्ययन को शिक्षण प्रणाली का एक क्षेत्र बनाने की पहल की। उन्होंने 'इंडियन एसोसिएशन ऑफ़ विमेन स्टडीज़' और 'सेंटर फ़ॉर विमेन डवलेपमेंट स्टडीज़' की स्थापना की। वीना दी के बहुमखी प्रतिभा है जिसमें अध्ययन और कार्यकर्ता का अद्भुत संगम रहा है और जिसने नीति निर्माण व महिला आंदोलन को समान रूप से प्रभावित किया है और करती रहेंगी।

रति बार्थोलोमियो (अप्रैल)

रति १९६० से राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से जुड़ी हुई हैं। १९६४ से वे कई नाट्य समूहों के साथ जुड़ी रहीं और 'यात्री', 'दियांतर' जैसे कई नाट्य समूहों की स्थापना की। नाटकों में छात्रों के साथ काम करते हुए उन्हें महसूस हुआ कि नाट्क एक ऐसी विधा भी हो सकती है जिसके माध्यम से हम विचारों और सोच में बदलाव ला सकते हैं। १९७१ में अमेरिका में एक कार्यशाला में भाग लेने के बाद उन्होंने खुद नाटकों द्वारा स्व विकास की कार्यशालाएं आयोजित कीं। रति दी ने नाटकों के द्वारा चेतना विस्तार और राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा और सवाल उठाने शुरू किए। वे पी.यू.सी.एल. और पी.यू.डी.आर. और सहमत से जुड़ी रही हैं। तब से उन्होंने कई ज़मीनी कार्यकर्ताओं, नारीवादी कार्यकर्ताओं को नाटक के माध्यम से आंदोलन में कुछ नया करने के प्रशिक्षण दिए हैं। उनके नाटकों 'राजदर्पण', 'जला पेड़' (हिरोशिमा पर बमबारी), 'काठ की गाड़ी' (कोढ़ पर) और 'बहु' (एक सामंती समाज में विधवा की स्थिति) ने थियेटर की दिशा में नए कीर्तिमान स्थापित किए।

लोतिका सरकार (जून)

१९८० में कानूनी सुधारों का जो दौर चला उसमें लोतिका सरकार ने एक मुख्य भूमिका निभाई है। वे भी 'समानता की ओर' जैसी रिपोर्ट निकालने वाली कमेटी की सदस्य थीं। वे दिल्ली की उन चार विचारकों में से एक हैं जिसने एक आदिवासी युवा लड़की के हिरासत में बलात्कार (मथुरा रेप केस) के मामले में १९७९ में भारत के प्रमुख न्यायाधीश के फैसले की आलोचना करते हुए एक खुला पत्र लिखा था। इस पत्र की प्रतियां गुजरात, महाराष्ट्र और दक्षिण भारत के कई राज्यों को भेजी गईं जिसका पूरे देश में इस मुद्दे पर एक बहस और आंदोलन चलाने में चौगुना असर कायम हुआ। इसकी वजह से बलात्कार संबंधित कानून में क्रांतिकारी परिवर्तन आए जैसे, बलात्कार और सहमति के कानूनी भेद का स्पष्टीकरण। लोतिका दी सेंटर फ़ॉर विमेन्स डवलेपमेंट स्टडीज़ नामक संस्था से जुड़ी हुई हैं। वे 'विमेन एंड लॉः कंटेंपरेरी प्रॉब्लम्स' नामक जर्नल की संपादक हैं।

सुभद्रा बुटालिया (जुलाई)

सुभद्रा जी सत्तर के दशक में चल रहे दहेज विरोधी आंदोलन का अभिन्न हिस्सा रहीं। खासतौर से 'ओम स्वाहः' नाटक के दौरान जो दहेज प्रथा और दहेज हत्याओं के खिलाफ़ जन जागरूकता का एक खास माध्यम बना। यह इतना दमदार नाटक था कि लोगों ने अपने अपने क्षेत्रों में इसका प्रदर्शन करने की मांग की। यह पहला मौका था मध्यमवर्गीय परिवारों की औरतों के सक्रिय रूप से आंदोलन में उतरने का। १९८३ में वे सुधा गोयल की दहेज हत्या के मामले पर हाई कोर्ट के फैसले की आलोचना करने के कारण उन पर न्यायालय की अवमानना का मामला दायर किया गया। सुभद्रा कर्मिका नामक संस्था की संस्थापक सदस्य हैं, जो कि दिल्ली में एक काउंसलिंग सेंटर के रूप में काम कर रही है। अभी हाल ही में 'गिफ़्ट ऑफ़ ए डॉटर' नाम से इन्होंने एक पुस्तक का प्रकाशन किया है जो कि उनके संघर्षों की और दहेज विरोधी आंदोलन की आत्माभिव्यक्ति है।

संवाद

गौरी चौधरी (अगस्त)

गौरी चौधरी जब पहली बार दिल्ली आईं तो वे 'मोबाइल क्रैच' नामक संस्था के साथ जुड़ीं, जो कि यमुना पुश्ता की बस्तियों में काम करती है। उनका पहला संघर्ष अनऑथराइज़्ड झुग्गी बस्तियों में रिक्शा चालकों को राशन कार्ड दिलाने के लिए था। उस समय वे 'सहेली' नाम की संस्था की संस्थापक सदस्याओं में से एक थीं, जो कि दिल्ली में महिलाओं का पहला संगठित समूह था। सहेली का पहला दफ़्तर उनके अपने घर में ही था। वे ज़मीनी स्तर पर लोगों के अधिकारों के लिए संघर्ष करती रहीं। उन्होंने बुनकरों का एक 'सुन्दर हैंडलूम सोसायटी' नाम से एक सहकारी संगठन बनाया और महिलाओं के लिए एक ऐसा मंच तैयार किया जिसमें वे हस्तशिल्प सीख सकें और उनसे निर्मित सामानों के साथ अपने हुनरों को प्रदर्शित कर सकें। पिछले बीस साल से गौरी हर अभियान एवं मुद्दों से जुड़ी हैं। औरतों के मूल अधिकारों, हिंसा, स्वास्थ्य आदि पर आवाज़ बुलंद करने के लिए औरतों को संगठित करने के प्रयासों में जुटी हुई हैं

उमा चक्रवर्ती (अक्तूबर)

उमा महिला आंदोलन के साथ १९७० से जुड़ी हैं जब स्वाश्रयी महिला संस्थाएं औरतों पर होने वाली हिंसा और अधीनता पर सवाल खड़ा कर रहे थे। इसी समय वे दिल्ली विश्वविद्यालय के अध्यापक आंदोलन और नागरिक अधिकार आंदोलन (एसोसिएशन फ़ॉर द प्रोटेक्शन ऑफ़ डेमोक्रेटिक राइट्स) में सक्रिय भूमिका निभा रही थीं। आपातकाल से एक साल पहले कई नागरिक और लोकतांत्रिक आंदोलन कैंपस और अध्यापकों के आंदोलन के साथ जुड़कर लोकतांत्रिक मुद्दों व औरतों पर होने वाली हिंसा, पितृसत्तात्मक व्यवस्था के ढांचों पर चर्चा/बहस चला रहे थे। १९७७ से वे औरतों के अधिकारों व लोकतांत्रिक अधिकारों से जुड़े आंदोलनों के साथ समान रूप से जुड़ी रही हैं। उमा एक इतिहास विज्ञाता भी हैं जिन्होंने औरतों के नज़रिए से इतिहास को दोबारा लिखा व उसकी दोबारा व्याख्या की है।

जया श्रीवास्तव (नवम्बर)

१९८० में दिल्ली आने से पहले जया पटना में सामाजिक कार्यों में सक्रिय थीं। १९८४ के दंगों के बाद वे मानव अधिकार व औरतों के अधिकारों से जुड़े मुद्दों से जुड़ीं। वे सहेली, अन्य कई व्यक्तियों व समूहों के साथ जुड़ीं जो कि उस वक्त दंगा पीड़ित विधवाओं के पुनर्वास के लिए काम कर रहे थे। कई सालों तक वे नागरिक एकता मंच की समन्वयक थीं, जो कि उस समय राहत कार्यों के लिए बनाई गई आम नागरिकों की एक कमेटी थी। इसके बाद जया अंकुर संस्था (जो कि बच्चों, खासतौर से लड़कियों, को अनौपचारिक शिक्षा व हुनर विकास के लिए काम करती है) के साथ जुड़ीं व उसे एक नई दिशा दी। वे आरक्षीय अधिकारों के लिए, सांप्रदायिकता के खिलाफ़ चलाए जा रहे व अन्य कई अभियानों में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं।

रेणुका मिश्रा (दिसम्बर)

रेणुका कृद्धि मजदूरों, भूमि सुधारों से जुड़े विभिन्न संघर्षों में जुड़ी रही हैं। वे सत्तर के दशक में देहात मजदूर यूनियन और ओम स्वाहाः नाटक के दौरान दहेज विरोधी आंदोलन में अपनी सक्रिय भूमिका निभाती रहीं। उन्होंने 'कैसे' नाम से एक पत्रिका के प्रकाशन व संपादन में सक्रिय योगदान दिया है। असंगठित क्षेत्रों और देशव्यापी विभिन्न किसान आंदोलनों के डॉक्यूमेंटेशन के साथ इन क्षेत्रों में महिलाओं को आगे लाने और उनकी अधिकारों को आवाज़ देने के संघर्ष में वे जुटी रही हैं। पिछले कुछ वर्षों से वे कश्मीर के मुद्दे पर गहरे रूप से जुड़ी रही हैं। वे कई अन्य संस्थाओं के साथ कश्मीर के बच्चों के लिए स्कूल मुहैया कराने, कश्मीर के स्थानीय समूहों को विकसित और सशक्तिकरण की ओर ले जाने में प्रयासरत् हैं। उन्होंने दिल्ली में निरंतर नामक संस्था की स्थापना की जो औरतों और शिक्षा के मुद्दों पर काम करने वाला एक संदर्भ केंद्र है।

लक्ष्मी कृष्णमूर्ति (जनवरी २००४)

साधारण लोगों के बीच गंभीर से गंभीर समस्या और मुद्दों को रोचक अंदाज़ में प्रस्तुत करने की कला के माध्यम से लक्ष्मी दी ने महिला आंदोलन को साक्षरता की बंदिशों मुक्त एक नई चेतना दी है। १९८३ में, उन्होंने 'अल्लारिपु' नामक संस्था की शुरूआत की। इस संगठन का मूल उद्देश्य नाटक कला और विकास में साम्य स्थापित करना था। उन्होंने ज़मीनी स्तर पर काम करने वाले समूहों, केवल महिला समूहों, और अन्य समूहों के साथ विकास कार्यों एवं आंदोलनों में नाटकों के प्रभावी प्रयोगों से जुड़े नीतियों और तरीकों पर काफ़ी काम किया है। उन्होंने महिला समूहों और संगठनों को अपनी अभिव्यक्ति, जनमत संग्रह और राजनैतिक एकजुटता के लिए सर्जनात्मक माध्यमों के उपयोग की क्षमता प्रदान की है।

notes

notes

notes

2002

JANUARY					
S		6	13	20	27
M		7	14	21	28
T	1	8	15	22	29
W	2	9	16	23	30
T	3	10	17	24	31
F	4	11	18	25	
S	5	12	19	26	

FEBRUARY					
S		3	10	17	24
M		4	11	18	25
T		5	12	19	26
W		6	13	20	27
T		7	14	21	28
F	1	8	15	22	
S	2	9	16	23	

MARCH					
S	31	3	10	17	24
M		4	11	18	25
T		5	12	19	26
W		6	13	20	27
T		7	14	21	28
F	1	8	15	22	29
S	2	9	16	23	30

APRIL					
S		7	14	21	28
M	1	8	15	22	29
T	2	9	16	23	30
W	3	10	17	24	
T	4	11	18	25	
F	5	12	19	26	
S	6	13	20	27	

MAY					
S		5	12	19	26
M		6	13	20	27
T		7	14	21	28
W	1	8	15	22	29
T	2	9	16	23	30
F	3	10	17	24	31
S	4	11	18	25	

JUNE					
S	30	2	9	16	23
M		3	10	17	24
T		4	11	18	25
W		5	12	19	26
T		6	13	20	27
F		7	14	21	28
S	1	8	15	22	29

JULY					
S		6	13	20	27
M		7	14	21	28
T	1	8	15	22	29
W	2	9	16	23	30
T	3	10	17	24	31
F	4	11	18	25	
S	5	12	19	26	

AUGUST					
S	31	3	10	17	24
M		4	11	18	25
T		5	12	19	26
W		6	13	20	27
T		7	14	21	28
F	1	8	15	22	29
S	2	9	16	23	30

SEPTEMBER					
S		7	14	21	28
M	1	8	15	22	29
T	2	9	16	23	30
W	3	10	17	24	
T	4	11	18	25	
F	5	12	19	26	
S	6	13	20	27	

OCTOBER					
S		5	12	19	26
M		6	13	20	27
T		7	14	21	28
W	1	8	15	22	29
T	2	9	16	23	30
F	3	10	17	24	31
S	4	11	18	25	

NOVEMBER					
S	30	2	9	16	23
M		3	10	17	24
T		4	11	18	25
W		5	12	19	26
T		6	13	20	27
F		7	14	21	28
S	1	8	15	22	29

DECEMBER					
S		7	14	21	28
M	1	8	15	22	29
T	2	9	16	23	30
W	3	10	17	24	31
T	4	11	18	25	
F	5	12	19	26	
S	6	13	20	27	

2003

JANUARY					
S		5	12	19	26
M		6	13	20	27
T		7	14	21	28
W	1	8	15	22	29
T	2	9	16	23	30
F	3	10	17	24	31
S	4	11	18	25	

FEBRUARY					
S		2	9	16	23
M		3	10	17	24
T		4	11	18	25
W		5	12	19	26
T		6	13	20	27
F		7	14	21	28
S	1	8	15	22	

MARCH					
S	30	2	9	16	23
M	31	3	10	17	24
T		4	11	18	25
W		5	12	19	26
T		6	13	20	27
F		7	14	21	28
S	1	8	15	22	29

APRIL					
S		6	13	20	27
M		7	14	21	28
T	1	8	15	22	29
W	2	9	16	23	30
T	3	10	17	24	
F	4	11	18	25	
S	5	12	19	26	

MAY					
S		4	11	18	25
M		5	12	19	26
T		6	13	20	27
W		7	14	21	28
T	1	8	15	22	29
F	2	9	16	23	30
S	3	10	17	24	31

JUNE					
S	1	8	15	22	29
M	2	9	16	23	30
T	3	10	17	24	
W	4	11	18	25	
T	5	12	19	26	
F	6	13	20	27	
S	7	14	21	28	

JULY					
S		6	13	20	27
M		7	14	21	28
T	1	8	15	22	29
W	2	9	16	23	30
T	3	10	17	24	31
F	4	11	18	25	
S	5	12	19	26	

AUGUST					
S	31	3	10	17	24
M		4	11	18	25
T		5	12	19	26
W		6	13	20	27
T		7	14	21	28
F	1	8	15	22	29
S	2	9	16	23	30

SEPTEMBER					
S		7	14	21	28
M	1	8	15	22	29
T	2	9	16	23	30
W	3	10	17	24	
T	4	11	18	25	
F	5	12	19	26	
S	6	13	20	27	

OCTOBER					
S		5	12	19	26
M		6	13	20	27
T		7	14	21	28
W	1	8	15	22	29
T	2	9	16	23	30
F	3	10	17	24	31
S	4	11	18	25	

NOVEMBER					
S	30	2	9	16	23
M		3	10	17	24
T		4	11	18	25
W		5	12	19	26
T		6	13	20	27
F		7	14	21	28
S	1	8	15	22	29

DECEMBER					
S		7	14	21	28
M	1	8	15	22	29
T	2	9	16	23	30
W	3	10	17	24	31
T	4	11	18	25	
F	5	12	19	26	
S	6	13	20	27	

2004

JANUARY					
S		4	11	18	25
M		5	12	19	26
T		6	13	20	27
W		7	14	21	28
T	1	8	15	22	29
F	2	9	16	23	30
S	3	10	17	24	31

FEBRUARY					
S	1	8	15	22	29
M	2	9	16	23	
T	3	10	17	24	
W	4	11	18	25	
T	5	12	19	26	
F	6	13	20	27	
S	7	14	21	28	

MARCH					
S		7	14	21	28
M	1	8	15	22	29
T	2	9	16	23	30
W	3	10	17	24	31
T	4	11	18	25	
F	5	12	19	26	
S	6	13	20	27	

APRIL					
S		4	11	18	25
M		5	12	19	26
T		6	13	20	27
W		7	14	21	28
T	1	8	15	22	29
F	2	9	16	23	30
S	3	10	17	24	

MAY					
S	30	2	9	16	23
M	31	3	10	17	24
T		4	11	18	25
W		5	12	19	26
T		6	13	20	27
F		7	14	21	28
S	1	8	15	22	29

JUNE					
S		6	13	20	27
M		7	14	21	28
T	1	8	15	22	29
W	2	9	16	23	30
T	3	10	17	24	
F	4	11	18	25	
S	5	12	19	26	

JULY					
S		4	11	18	25
M		5	12	19	26
T		6	13	20	27
W		7	14	21	28
T	1	8	15	22	29
F	2	9	16	23	30
S	3	10	17	24	31

AUGUST					
S	1	8	15	22	29
M	2	9	16	23	30
T	3	10	17	24	31
W	4	11	18	25	
T	5	12	19	26	
F	6	13	20	27	
S	7	14	21	28	

SEPTEMBER					
S		5	12	19	26
M		6	13	20	27
T		7	14	21	28
W	1	8	15	22	29
T	2	9	16	23	30
F	3	10	17	24	
S	4	11	18	25	

OCTOBER					
S	31	3	10	17	24
M		4	11	18	25
T		5	12	19	26
W		6	13	20	27
T		7	14	21	28
F	1	8	15	22	29
S	2	9	16	23	30

NOVEMBER					
S		7	14	21	28
M	1	8	15	22	29
T	2	9	16	23	30
W	3	10	17	24	
T	4	11	18	25	
F	5	12	19	26	
S	6	13	20	27	

DECEMBER					
S		5	12	19	26
M		6	13	20	27
T		7	14	21	28
W	1	8	15	22	29
T	2	9	16	23	30
F	3	10	17	24	31
S	4	11	18	25